''आख़िर क्या वजह है कि तुम अल्लाह की राह में बेबस मर्दों, औरतों और बच्चों की ख़ातिर नहीं लड़ते जो कमज़ोर पाकर दबा लिए गए हैं और फ़रियाद कर रहे हैं कि ख़ुदाया। हमको इस बस्ती से निकाल जिसके रहनेवाले ज़ालिम हैं ।और अपनी तरफ़ से हमारा कोई हामी व मददगार पैदा कर।) (कुरआन 4 : 75)

इसलिए, इस्लाम अपने माननेवालों को हुक्म देता है कि वे अपने-आप को सुधरने व पाक करने की ज्यादा से ज्यादा कोशिश करें और समाज में शान्ति और न्याय स्थापित करें। एक मुसलमान अपने आस-पास जुल्म और नाइनसाफ़ी को होते देखकर ख़ामोश नहीं बैठ सकता। इस्लाम मुसलमानों को ख़ुदा की पैदा की हुई चीज़ में बैलेंस बनाए रखने के लिए सरगरमी के साथ काम करने की ताकीद करता है। जंग चाहे कितने ही अच्छे मक़सद के लिए हो पवित्र कुरआन निर्दोष लोगों के कत्ल को माफ़ नहीं करता। समाज में दहशत फैलाने का नाम जिहाद नहीं है और न ही इस्लाम की शिक्षाओं का उससे कुछ लेना-देना है।

सहनशीलता

का इतिहास :

अब पश्चिमी दुनिया के विद्वान भी इस मिथक से इनकार करने लगें हैं कि मुसलमान लोंगों को धर्मान्तरण के लिए ज़ोर डालते हैं। महान इतिहासकार डी लेसी ओ लिअरी ने लिखा है "इतिहास गवाह है कि अतिवादी मुसलमानों की कथाएँ, उनकी संसार विजय और विजित जातियों को तलवार की नोक पर मुसलमान करना, ये सब भद्दी , बेढंगी और बेतुकी अफ़वाहें हैं, जिन्हें इतिहासकार बार-बार दोहराते रहे हैं।

मुसलमानों के लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि उनका ईमान उन्हे इस बात से रोकता है कि वे लोगों को उनके नज़रिये को समझने के लिए विवश करें। कुरआन कहता है कि

''धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात ग़लत खयालात से अलग होकर स्पष्ट हो गई है। तो अब जो कोई तागूत को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने ऐसा सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं। अल्लाह सब कुछ सुनने और जाननेवाला है। (कुरआन : 2-256)

इस्लाम

आतंकवाद की निन्दा करता है :

असहाय लोगों के दिलों में दहशत बिठाना, पूरी की पूरी इमारतों व सम्पत्तियों को ख़त्म कर देना, बम फोड़ना और औरतों बच्चों और निर्दोष लोगों के हाथ-पैर काट देना, इस्लाम और मुसलमानों के नज़दीक इस तरह के सारे काम ग़लत और घृणित हैं।

फिर वह चाहे किसी भी तरह की दहशतगर्दी हो, जिसमें पश्चिमी देशों का समर्थन प्राप्त दहशतगर्दी भी शामिल है जिसने दूसरी तमाम दहशतगर्दियों से कहीं जयादा लोगों को ज़ख्मी क़त्ल और विस्थापित किया है।

अगर कोई मुसलमान कोई दहशतगर्दी का काम करता है तो अपने ही धर्म-इस्लाम के नियमों की अवहेलना करने का दोषी होगा। लेकिन क्या यह सही होगा कि इसके नतीजे में हम सारे ही मुसलमानों पर दोषारोपण कर दें, जबकि उनका धर्म भी इस के ख़िलाफ़ है ? मुसलमान अल्लाह की फ़रमाँबरदारी , शान्ति , दयाभावना और क्षमाभावना वाले धर्म को मानते हैं । उनकी बहुत बड़ी तादाद का इस तरह की हिंसक गतिविधियों से कोई लेना - देना नहीं होता,मीडिया उन्हें मुसलमानों के साथ जोड़ देती है। इस्लाम अतिवाद का धर्म है ही नहीं।

अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ हुस्ने सुलूक करो, और उनके साथ इनसाफ़ का बरताव करो जिन्होंने तुमसे दीन के मुआमले में जंग नहीं की, और न तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला, यकीनन अल्लाह इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द फ़रमाता है।

इस्लाम

एकता के सूत्र में बाँध देनेवाला है

इस्लाम किसी लड़ाकू विचारधारा का नाम नहीं है, बल्कि यह तो एक जीवन शैली है जो नस्ल और रीति-रिवाजों की बुनियाद से ऊपर की चीज़ है। कुरआन बार-बार हमें हमारी उत्पत्ति के बारे में याद दिलाता है।
'' लोगो हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बना दिये ताकि तुम एक-दुसरे को पहचानो। हक़ीक़त में अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे ज्यादा इज़्ज़तवाला वह है जो तुम्हारे अन्दर सबसे ज्यादा परहेज़गार है। यक़ीनन, अल्लाह सब कुछ जाननेवाला ओर बाख़बर है। (कुरआन 49 : 13)

दरअस्ल, यही इस्लाम की शिक्षाओं की व्यापकता है जिसने इस्लाम को दुनिया का सबसे तेज़ फैलनेवाला धर्म बना दिया है। इनसानों के बीच आपसी झगड़े और फ़िरक़ाबन्दी के इस दौर में, रियासत और व्यक्तिगत समूहों की तरफ़ से होनेवाली दहशतगर्दी (जिससे दुनिया सहमी हुई है) का मुक़ाबला करने के लिए इस्लाम ही है जो भविष्य में उम्मीद की किरण नज़र आता है।

इस्लाम अतिवाद का धर्म नहीं हैं

अल्लाह कहता है :

"..... जिसने किसी एक इनसान को क़त्ल कर दियाउसने मानो सारे ही इनसानों को क़त्ल कर दिया और जिसने किसी की जान बचाई उसने मानो सारे इनसानों को बचा लिया। (कुर

हमसे सम्पर्क करें

इस्लामिक इनफ़ॉरमेशन सेंटर

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000

040 - 6832 7832

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

क्या इस्लाम एक अतिवादि धर्म है?

''इस्लामी आतंकवदी '' मूसलमान बुनियादपरस्त'' ''अतिवादी'' ''कट्टरपंथी मुसलमान, पिछले कुछ सालों में मुसलमानों और कुछ संस्थाओं के साथ बहुत ही ग़लत तरीक़े से इस तरह के लेबल लगा दिए गए हैं।

मीडिया ने इस्लाम की जो तस्वीर खींची है, उसने बहुत-से ऐसे लोगों को जो धर्म का बहुत ही सीमित ज्ञान रखते हैं, गुमराह कर दिया है। जिसके कारण लोगों में इस्लाम की इस शांतिपूर्ण और उदार जीवन शैली के बारे में नकारात्मक सोच पैदा हो रही है। इस्लाम के बारे में पक्षपातपूर्ण दुष्प्रचार और अज्ञानता का मुक़ाबला, इस्लाम को इसकी अपनी शिक्षाओं के द्वारा समझकर किया जा सकता है। यानी कुरआन (जिसे मुसलमान ख़ुदा की किताब मानते हैं) और नबी (सल्ल) की सही हदीसों को समझकर इन शिक्षाओं को समझने के बाद, इनसान इस्लाम को हर तरह की शिद्धत पसन्दी से बिल्कुल अलग पाता है।

कुरआन को किस तरह समझा जा सकता है ?

जब कभी हम कुरआन या नबी(स) की शिक्षाओं का अध्ययन करें तो हमें यह ज़रुर समझना चाहिए कि वह बात किस सन्दर्भ में कही गई है।

क़ुरआन की निम्न आयत उन लोगों को बुहत पसन्द है जो लोगों को इस्लाम के बारे में गुमराह करना चाहते हैं :

'' और उन्हें क़त्ल करो जहाँ कही भी तुम उन्हें पाओ। और उन्हें निकालो जहाँ से उन्होंने तुमको निकाला है। क्योंकि फ़ित्ना (उपद्रव) क़त्ल से भी अधिक बुरा है। लेकिन मस्जिदे-हराम के क़रीब तुम उनसे न लड़ो जब तक कि वे ख़ुद तुमसे वहाँ न लड़े। मगर जब वे तुमसे वहाँ लड़ाई करें तो उन्हें क़त्ल करो-ऐसे विधर्मियों का ऐसा ही बदला है।'' (कुरआन, 2:91)

अक्सर इस वाक्य को काट-छाँट कर इस तरह पेश किया जाता है कि '' और उन्हे क़त्ल करो जहाँ भी तुम उन्हें पाओ ....''
बहुत सीधा सा सवाल है, ''किसे क़त्ल करें ?'' इसका जवाब जानने के लिए हमें उपरोक्त वाक्य के पहले और बाद वाले वाक्यों को पढ़ लेना चाहिए।

इन वाक्यों में ख़ुद की हिफ़ाज़त के लिए लड़ने (यानी उनके साथ जो तुमसे लड़े) की बात कही गई है। बाद वाली आयत इस तरह है :

'' फिर अगर वे बाज़ आ जाएँ तो जान लो कि अल्लाह भी माफ़ करनेवाला और रहम करनेवाला है।'' क़ुरआन (2:192)

ये आयतें उस समय उतरी थीं जब मुसलमानों को ईमान लाने के कारण उनके घरों से निकाल दिया गया था। उन्होंने 10 सालों से अधिक समय तक ज़ुल्म और यातनाएँ झेलीं। फिर आख़िरकार उन्हें अपना घर-बार छोड़कर सुरक्षित स्थान पर जाना पड़ा।

ऊपर की आयतें काफ़िरों के बारे में उतरी थीं जिन्होंने मुसलमानों पर जुल्म पर जुल्म किए और जहाँ भी वे पनाह लेते वहीं जाकर उन पर हमला करने की साजिशें करते। इसलिए ऊपर की आयत को हमें इसी सन्दर्भ और परिस्थितियों में समझना चाहिये।

इस उदाहरण से यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कुरआन की आयतों को उनके सन्दर्भ और प्रसंग में समझना ज़रूरी है, क्योंकि ये आयतें 23 सालों में परिस्थितियों के अनुसार। अरबी भाषा असल में उतरी। यह बात भी बहुत महत्वपूर्ण है कि कुरआन तो अरबी मे उतरा था। इसलिए इसका विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी हो सकता है।

जंग की इजाज़त

इसमे कोई शक नहीं होना चाहिए कि मुसलमानों को भी (सब की तरह) अपने ऊपर होनेवाले हमलों और जुल्मों के ख़िलाफ़ जंग करने का क़ानूनी अधिकार है।

इस्लाम की शिक्षा यह है कि जंग समाज में शान्ति स्थापित करने के लिए और जुल्म को बढ़ने से रोकने के लिए होनी चाहिए, जोकि स्थिति के अनुसार रक्षात्मक भी हो सकती है और आक्रामक भी। यदि उसके ख़िलाफ़ जंग का ऐलान कर दिया जाए तो इस्लाम हर जीवन व्यवस्था की तरह इनसान को जिन्दा हालत में बाक़ी रखने के लिए आत्म-रक्षा का अधिकार देता है। कुरआन मे है :

'' जिनके ख़िलाफ़ जंग की जा रही है, उन्हे लड़ने की इजाज़त दे दी गई, क्योंकि वे मज़लूम हैं।''
(कुरआन 22 : 39)

फिर जब दुश्मन जंग बन्द कर दे तो मुसलमानों को भी लड़ाई बन्द करने का हुक्म दिया गया है।

हज़रत अबू-बक्र (रज़ि), नबी (सल्ल) के सबसे गहरे दोस्त और पहले ख़लीफ़ा, जंग के इस्लामी उसूल बताते हुए ऊपर की आयत को पढ़ने के बाद बताते हैं कि हमें जंग के समय क्या नहीं करना चाहिए :

'' और अगर वे शन्ति की तरफ़ झुकें तो तुम भी शान्ति के लिए झुक जाओ। और अल्लाह पर भरोसा रखो, यक़ीनन वह सब कुछ सुन्नेवाला और जान्नेवाला है
(कुरआन, 8 : 61)

- **दग़ा नहीं करनी चाहिए।**
- **लाश का अगं-भग नहीं करना चाहिए।**
- **सीधे रास्ते से विमुख नहीं होना चाहिए।**
- **किसी बूढ़े बच्चे या औरत को नही मारना चाहिए।**
- **पेड़ों और फ़सलों को जलाना या किसी प्रकार का नुक़सान नहीं पहँचाना चाहिए।**
- **खाना हासिल करने के अलावा दुश्मन के जत्थे को क़त्ल नहीं करना चाहिए**
- **जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी इबादत के लिए समर्पित कर दी हो, उन्हें नुक़सान नहीं पहुँचाना चाहिए।**

जिहाद के बारे में ग़लतफ़हमियाँ :

यूँ तो पश्चिमी दुनिया में इस्लाम के बारे में काफ़ी ग़लतफ़हमियाँ फैली हुई हैं लेकिन जिहाद शब्द पर सबसे ज्यादा प्रतिक्रियाएँ देखने को मिलती हैं। जिहाद शब्द के साथ सबसे बुरा सुलूक किया गया है। इसके नाम पर मुसलमानों की एक बिगड़ी हुई छवि दुनिया के समाने पेश की गई है कि मुसलमान लड़ाई पसन्द होते हैं, तलवार की नोक पर लोगों से अपनी बात मनवाते हैं आदि। सलीबी जंगों (Crusades) के दौरान और बाद में भी सदियों तक जो अविश्वास फैलाया जाता रहा उन्ही में से एक मिथक यह भी था। और बद नसीबी से आज तक यह बरक़रार है।

जिहाद शब्द 'ज ह द' से बना है, जिसका मतलब होता है संघर्ष करना। इस तरह कहा जा सकता है कि जिहाद संघर्ष करते रहने का नाम है। नबी (स) ने फ़रमाया कि बेहतरीन जिहाद वह है जो अपने मन की बुरी ख़ाहिशों के ख़िलाफ़ किया जाए। वास्तव में जिहाद अपने अन्त : संघर्ष का नाम है जो इनसान पाकबाज़ बनने के लिए और अपनी ज़िन्दगी के हर पहलू में अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करने के लिए करता है उसके बाद, जिहाद नाम है नाइनसाफ़ी के खिलाफ़ खडा हो जाने का। दूसरे धर्मों की तरह, इस्लाम भी आत्मरक्षा के लिए और जुल्म,शोषण व अत्याचार का बदला लेने के लिए हथियार उठाने की इजाज़त देता है।
कुरआन में है :
अल्लाह मुसलमोनों को यह कहकर अतिवाद से रोकता है कि-
'' अपनी सीमाओं को मत लोंघो।''
जंग की कोई भी स्थिति सीमाओं को पार कर देने का बहाना नहीं बन सकती
इस्लाम अन्धे प्रतिशोध से बचने की शिक्षा देता है।

... **''और किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर न उभार दे कि तुम इनसाफ़ करना छोड़ दो। इनसाफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है।''**
(कुरआन 5 : 8)